अथ नन्दीश्वरद्वीप की उत्तरदिशा सम्बन्धि जिनालय पूजा

(पद्धरी छन्द)

नन्दीश्वर उत्तर दिश्य जान, त्र्योदश जिन थानक शुभ बखान।
सो जजों थाप इस ठाम सोय, नहिं वहाँ जानकी शक्ति मोय।।१।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे उत्तरदिशि त्रयोदशचैत्यालयान्यत्र अवतरत अवतरत संवौषट् आह्वाननम्।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे उत्तरदिशि त्रयोदशचैत्यालयान्यत्र तिष्ठत तिष्ठत ठः ठः स्थापनम्।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे उत्तरदिशि त्रयोदशचैत्यालयान्यत्र मम सन्निहितानि भवत भवत वषट् सन्निधिकरणम्।

अथाष्टक

(वीर जिनन्दकी चाल)

जल लै गंगा धारको जी निरमल तरसन पाय।
सुभग पात्र धर लाइयौ जी पूजन को जिन पाय।।
उत्तर दिश जिन थान जी।।१।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपोत्तरदिशि त्रयोदशचैत्यालयेभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चन्दन बावन नीरतें जी घसि कर पातर धार।
लई अरघ कर आपनै जी पूजन जिन भव वारि।। उ०।।२।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपोत्तरदिशि त्रयोदशचैत्यालयेभ्यो संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षत सार सुहावना जी मुकता फल से जोय।
खण्ड विना शुभ वीनके जी पूजौं जिनपद सोय।। उ०।।३।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपोत्तरदिशि त्रयोदशचैत्यालयेभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

फूल मनोहर गंध का जी वरन भले सुखकार।
कलपवेल से लाइया जी पूजन जिनपद सार।।
उत्तर दिश जिन थान जी।।४।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपोत्तरदिशि त्रयोदशचैत्यालयेभ्यो कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

नाना रस नैवेद ले जी मोदकादि बनवाय।
पातर शुभ में घालिके जी जिनके पूजों पाय।। उ०।।५।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपोत्तरदिशि त्रयोदशचैत्यालयेभ्यो क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीपक मणिमय सोहना जी भली जाति के धार।
तिनकी कर शुभ आरती जी पूजों जिनपद सार।। उ०।।६।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपोत्तरदिशि त्रयोदशचैत्यालयेभ्यो मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप करी शोभा मई जी अगर चन्दना लाय।
सकल पीस इकठी करी जी पूजन को जिन पाय।। उ०।।७।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपोत्तरदिशि त्रयोदशचैत्यालयेभ्यो दुष्टाष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रीफल लौंग बदाम ले जी खारिक पिस्ता लाय।
पुंगीफल आदिक फलों तें पूजों जिनके पाय।। उ०।।८।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपोत्तरदिशि त्रयोदशचैत्यालयेभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल चन्दन अक्षत सही जी पहुप भले नैवेद।
दीप धूप फल अर्घ ले जी पूजों जिन निरखेद।। उ०।।९।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपोत्तरदिशि त्रयोदशचैत्यालयेभ्यो अनर्घपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ प्रत्येक अर्घ

(अडिल्ल छन्द)

नन्दीश्वर उत्तरदिश गिर अंजन सही।
ताके ऊपर है जिन थानक पुन्यमही॥
सुर तौ परतछ जाय जजैं जिनपद तहाँ।
हम तौ भावन भाय अरघ जजहैं इहाँ॥१॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपस्योत्तरदिश्यंजनगिरिसम्बन्धिजिनालयायार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

या अंजनगिर पूरब वापी है सही।
ता मध दधिगिर शीश थान जिन शुभ मही॥
सुर तौ परतछ जाय जजैं जिनपद तहाँ।
हम तौ भावन भाय अरघ जजहैं इहाँ॥२॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपस्योत्तरदिशांजनगिरेः पूर्ववापिकामध्यदधिगिरिसम्बन्धि-जिनालयायार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

इसही वापिक के मुख रतकर जानिए।
तापै है जिन भवन महा पुन थानिए॥
सुर तौ परतछ जाय जजैं जिनपद तहाँ।
हम तौ भावन भाय अरघ जजहैं इहाँ॥३॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपस्योत्तरदिश्यंजनगिरेः पूर्वदिशवापिकामुखप्रथमरतिकरसम्बन्धि-जिनालयायार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

इस वापिक के ही मुख जानों रतकरा।
ता ऊपर जिन थान सकल पातक हरा॥
सुर तौ परतछ जाय जजैं जिनपद तहाँ।
हम तौ भावन भाय अरघ जजहैं इहाँ॥४॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपस्योत्तरदिश्यंजनगिरेः पूर्ववापिकामुखद्वितीयरतिकरसम्बन्धि-जिनालयायार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

उत्तर नन्दीश्वर अंजन दक्षिण सही।
वापिक मध दधिगिर ऊपर जिनथल मही॥
सुर तौ परतछ जाय जजैं जिनपद तहाँ।
हम तौ भावन भाय अरघ जजहैं इहाँ॥५॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपस्योत्तरदिश्यंजनगिरेः दक्षिणवापिकामध्यदधिगिरिसम्बन्धि-जिनालयायार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

या वापिक के मुख ही रतकर गिर सही।
ता ऊपर जिन थान अकीर्तम शुभ मही॥
सुर तौ परतछ जाय जजैं जिनपद तहाँ।
हम तौ भावन भाय अरघ जजहैं इहाँ॥६॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपोत्तरदिश्यंजनगिरेर्दक्षिणवापिकामुखप्रथमरतिकरसम्बन्धि-जिनालयायार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

या ही वापिक के मुख रतकर दूसरा।
तापै जिनका थान महा शुभ तें भरा॥
सुर तौ परतछ जाय जजैं जिनपद तहाँ।
हम तौ भावन भाय अरघ जजहैं इहाँ॥७॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपोत्तरदिश्यंजनगिरेर्दक्षिणवापिकामुखद्वितीयरतिकरसम्बन्धि-जिनालयायार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

उत्तर अंजनगिर की पच्छम जानिए।
वापिक मध दधिगिरपै जिनथल मानिए॥
सुर तौ परतछ जाय जजैं जिनपद तहाँ।
हम तौ भावन भाय अरघ जजहैं इहाँ॥८॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपस्योत्तरदिश्यंजनगिरेः पश्चिमवापिकामध्यदधिगिरसम्बन्धि-जिनालयायार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

या ही वापिक के मुख ऊपर रतकरो।
तापै जिनथानक है सो हम अघहरो॥

सुर तौ परतछ जाय जजैं जिनपद तहाँ।
हम तौ भावन भाय अरघ जजहैं इहाँ॥९॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपस्योत्तरदिश्यंजनगिरेः पश्चिमवापिकामुखप्रथमरतिकरसम्बन्धि-जिनालयायार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

इसही वापिक के मुख जानो रतकरा।
तापै जिनको थान भविन को अघहरा॥
सुर तौ परतछ जाय जजैं जिनपद तहाँ।
हम तौ भावन भाय अरघ जजहैं इहाँ॥१०॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपस्योत्तरदिश्यंजनगिरेः पश्चिमवापिकामुखद्वितीयरतिकरसम्बन्धि-जिनालयायार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

नन्दीश्वर उत्तर अंजन उत्तर सही।
मध्य वापिका दधिगिर पै जिनथल मही॥
सुर तौ परतछ जाय जजैं जिनपद तहाँ।
हम तौ भावन भाय अरघ जजहैं इहाँ॥११॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपस्योत्तरदिश्यंजनगिरेरुत्तरवापिकामध्यदधिगिरिसम्बन्धिजिनालयायार्घं०

इसही वापिक के मुख ऊपर है सही।
रतिकर के सिर ऊपर जिनथल की मही॥
सुर तौ परतछ जाय जजैं जिनपद तहाँ।
हम तौ भावन भाय अरघ जजहैं इहाँ॥१२॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपस्योत्तरदिश्यंजनगिरेरुत्तरवापिकामुखप्रथमरतिकरसम्बन्धिजिना०

याही वापिक मुख ऊपर रतकर कहा।
तापै जिनथल जान हरष मनमें लहा॥
सुर तौ परतछ जाय जजैं जिनपद तहाँ।
हम तौ भावन भाय अरघ जजहैं इहाँ॥१३॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपस्योत्तरदिश्यंजनगिरेरुत्तरवापिकामुखद्वितीयरतिकरसम्बन्धि-जिनालयायार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

नन्दीश्वर उत्तर दिसको इम जानिए।
त्रयोदश जिनके थान महापुन्य खानिए॥
सुर तौ परतछ जाय जजैं जिनपद तहाँ।
हम तौ भावन भाय अरघ जजहैं इहाँ॥१४॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपस्योत्तरदिश्यंजनगिरिसम्बन्धित्रयोदशजिनालयेभ्यो महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ जयमाल

(दोहा)

नन्दीश्वर उत्तर दिसा, कहे जिनेश्वर थान।
तिनकी थुति भाषूं सही, करो मोही अघ हानि॥१॥

(वेसरी छन्द)

नन्दीश्वर उत्तर को जानों। है जिन भवन पाप हर थानों।
परतछ तौ जहाँ अमरा जावैं। हमसे दीन भावना भावैं॥२॥

देवन को मौसर है भाई। करें बिनंती भक्ति उपाई।
ताके फल शिव मारग पावैं। हमसे दीन भावना भावैं॥३॥

मुनि गणधर को मौसर नाहीं। दरसन नन्दीश्वर के माहीं।
तौ औरन की को मुख गावै। हमसे दीन भावना भावैं॥४॥

इन्द्रन की शक्ति है भारी। और देव सब पुन्य अधिकारी।
नन्दीश्वर जप पूज करावैं। हमसे दीन भावना भावैं॥५॥

नन्दीश्वर उत्तरको जानों। पूजैं फिर जिनजी तो थानौं।
ते या भव में उच्च कहावैं। हमसे दीन भावना भावैं॥६॥

सफल भवांतर तबही जानों। जब होवे नन्दीश्वर जानौं।
पूजैं जिन अर पुन्य बढ़ावैं। हमसे दीन भावना भावैं॥७॥

यहाँ तौ बिनती हम इम ठानैं। देव जिनेश्वर गुणकर गानैं।
अहो देव सब अन्तर पावैं। हमसे दीन भावना भावैं॥८॥

अब जिनदेव करो विधि ऐसी। नन्दीश्वर पूजें जिन जैसी।
और घनी मुख कबलौ गावैं। हमसे दीन भावना भावैं॥९॥

दीनदयाल भाव की जानौं। तातैं कहे न परै कहानौं।
मनसा पूरी कर कवि गावैं। हमसे दीन भावना भावैं॥१०॥

(दोहा)

ऐसी बिनती करन कों, मनसा रहै अपार।
नन्दीश्वर कब जाँय हम, उर की करैं पुकार॥११॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे उत्तरदिशि त्रयोदशचैत्यालयेभ्यः पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

इति उत्तरदिशा पूजा समाप्त

अथ समुच्चय आरती

(दोहा)

अष्टम दीप नन्दीसुरा, उत्तम तीरथ थान।
मनुष देह पहुँचे नहीं, पूजें सुर पुन्यवान॥१॥
ताकी गुणमाला कहौं, सुनौं संत धर भाव।
जो सुनि वहाँ चलनौ चहै, बढ़ै राग चित्त चाव॥२॥

(मुणयणाणंद की चाल)

दीप दधमाल की कथा सुखदाय है।
सुनै उर धरै तव ज्ञान बहु पाय है॥

दीप जम्बू पहल लाख जोजन मही।
मेर इक तास मध और रचना कही।।३।।

तास को वेढि गिर चार दधि जानियै।
ता विषैं दीप बहु देव खग थानियै।।
आदि दिग चारु रचना घनी है सही।
व्यास दो लाख जोजन लखो जिन कही।।४।।

धातकी खण्ड पूजा गिरद भाय जी।
मेर जुग पूर्व पच्छिम धरा पाय जी।।
चार लाख जोजना व्यास विस्तार है।
और रचना घनी सुरत उनहार है।।५।।

आठ लख जोजना समुद कालोदधा।
ता परै तीसरा दीप पुहकर सधा।।
बीच ताके कहा मानषोत्तर सही।
व्यास षोडश लखौ जोजना धुनि कही।।६।।

मेर जुगही कहे अर्ध पुहकर धरा।
पूर्व पच्छिम दिशा अधिक महिमा करा।।
चार लघु मेर यह सहस चौरासिया।
त्वंग पन जानि इम और धुनि भाषिया।।७।।

ता परै तीसरा समुद आवै बड़ा।
लाख बत्तीस जोजन सुरत में पड़ा।।
दीप चौथा जुजन लाख चौंसठ सही।
समुद चौथा तनों व्यास सुनि अब रही।।८।।

लाख इक सौ अठाईस जोजन कहा।
पञ्चमा दीप विस्तार मुनि इम चहा।।
छप्पन अधिक लाख दोय सत होय जी।
पांचमें जलधि की कथा कहों तोहि जी।।९।।

पांच सौ लाख अरु अधिक बारा सही।
दीप षष्टम सहस लाख चौबिस कही।।
बीस है लाख अरु अधिक अड़ताल जी।
जाम इम समुद्र षष्टम जला पाल जी।।१०।।

लाख चालीस से अधिक छिनवै गिनौ।
सातमौ दीप विस्तार जिन इम भनौ।।
लाख इक्यासि सै अधिक लख बानवै।
सातमें समुद को व्यास इम जानवै।।११।।

एक सै त्रेसठ कोटि मन लाइए।
अधिक लख और चौरासिया गाइए।।
दीप अष्टम तनो इतो विस्तार जी।
जान इम दुगुन दुगुनौ सबै सार जी।।१२।।

दीप अष्टम विषै चार ही दिस सही।
चार अंजन गिरा स्याम मणिमय कही।।
वापिका चार दिश जानि षोडश बड़ी।
बीच तिन सबन के दधिगिरा लखमड़ी।।१३।।

वापिका सकल जल खानि चव कूटि की।
रतकरा तिन विषै जुगल जुग खूंट की।।
सकल रतिकर गिनै होय बत्तीस जी।
सबै गिर मेल होय बावना दीस जी।।१४।।

शीश सबही तनै गेह जिनराय है।
जजैं भवजीव के सधैं सब काज हैं।।
गेह बावन सकल कनक रतना जड़े।
बिम्ब जिनदेव के अधिक उपमा भरे।।१५।।

मास कातिक तथा फाग मन लाय जी।
जानि अषाढ़ इन शुकलपक्ष पाय जी।।

इन दिना इन्द्र सब देव संग लायकैं।
जाँय नन्दीश्वरे दीप हरषायकैं।।१६।।

एक इक इन्द्र दोय दोय पहरौं सही।
एक दिस पूज जिस पदनको तिस मही।।
च्यार हर इमै जिन पूज्य बसु दिन करैं।
शेष सुर सकल मुख शब्द जय उच्चरैं।।१७।।

भक्ति तैं भरे गुन गान जिन गाय हैं।
तास फल ही सकल पाप को दाहि हैं।।
एक भव पायकैं मोक्ष जावै सही।
भक्ति जिन देव फल देय जिन धुनि कही।।१८।।

देव बिन मनुष्य तौ जाय नहीं कोय जी।
देव ही तीन रित जजै मद खोय जी।।
और भी दिनन में जात सुर सेव को।
नचैं बहु गान कर जजैं जिनदेव को।।१९।।

नन्दीश्वर जाय जिन पूज ते देव भी।
मास यहाँ पुन्य द्रव्य सो नहीं केव भी।।
इन तीन काय इस बात आछी बनी।
मोक्ष मग नय थकी मनुष की शुभ गिनी।।२०।।

धन्य हैं जीव जे जाय नन्दीश्वरा।
जजैं जिन पाय थुति गाय पातिक हरा।।
विनंती यह जिन देहि ओसर इसौ।
जाय उस दीप प्रभु पाय पूजैं तिसौ।।२१।।

और नहीं चाह जिन सेव बिन पाइए।
रहे निज दिन इसी प्रभू गुन गाइए।।
मोक्ष नहिं बने इस सेव तुम दे भली।
बिनती सुनो जिन दयानिधि सुखरली।।२२।।

(दोहा)

नन्दीश्वर जिनगेह की, माल धरै गुन जेह।
भली ''टेक'' ताकी भई, पूजे जिन कर नेह॥२३॥

कबहूँ ''टेक'' निवार अघ, पूजत है तुम पाय।
ता फल मंगल संपजै, जय जय जय जिनराय॥२४॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपसम्बन्धिजिनालयेभ्यः पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा॥

इति नन्दीश्वर पूजन विधान समाप्त

श्री त्रैलोक्य जिनालय पूजा

(दोहा)

द्वीप अढाई के विषैं, भये जिनन्द अनंत।
ह्वैंगे केवलज्ञानमय, नाथ अनन्तानन्त॥१॥
तिनकौं बंदन करि सदा, त्रिजग जिनालय जेह।
तिन सबकौ पूजन करौं, मन वच तन धर नेह॥२॥

गाथा (त्रैलोक्यसारकी)

तिहुवणजिणिंदगेहे, अकिट्टिमे किट्टिमे तिकालभवे।
वणकुमरविडंग्गामरखेचरवंदिए वंदे॥१०१७॥

(अडिल्ल)

तीन लोक के कृत्य, अकृत्य जिनालय जे।
इन्द्र नरेन्द्र खगेन्द्र, नमावत भाल जे॥
तिनकों वंदत जे, त्रिभुवन थिति गायकें।
नित सबकों मैं वंदौं शीश नवायकें॥३॥